

केंद्रीय विद्यालय संगठन क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु संभाग

कक्षा	पाठ का नाम	शिक्षक/शिक्षिका का नाम	विद्यालय का नाम
आठवीं	क्या निराश हुआ जाए	मनीषा खत्री	के. वी. ए. एफ. एस यहलंका

लेखक- हजारी प्रसाद द्विवेदी

हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित 'क्या निराश हुआ जाए' एक श्रेष्ठ निबंध है। इस पाठ में बताया गया है कि आजकल हमारे देश में ईमानदार व्यक्ति बहुत से कष्ट उठा रही हैं परंतु बेईमान एवं धोखेबाज खूब फल-फूल रहे हैं इसमें यह भी सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि सच्चाई एवं ईमानदारी जैसे **सद्गुण** समाज से अभी पूरी तरह नष्ट नहीं हुए हैं इसलिए हमें निराश होने की आवश्यकता नहीं है

पाठ का सार

इस पाठ के द्वारा लेखक देश में उपजी सामाजिक बुराइयों के साथ-साथ अच्छाइयों को भी उजागर करने के लिए कहते हैं। वे कहते हैं समाचार पत्रों को पढ़कर लगता है सच्चाई और ईमानदारी खत्म हो गई है। आज आदमी गुणी कम और दोषी अधिक दिख रहा है। आज लोगो की सच्चाई से आस्था डिगने लगी है। कानून और धर्म अलग-अलग हैं। परन्तु कुछ लोग कानून को धर्म से बड़ा मानते हैं। समाज में कुछ लोग ऐसे हैं जो बुराई को रस लेकर बताते हैं। बुराई में रस लेना बुरी बात है। लेखक के अनुसार सच्चाई आज भी दुनिया में है इसके कई उदाहरण उन्होंने पाठ में दिए हैं।

लेखक आज के समय में फैले हुए डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार से बहुत दुखी है। आजकल का समाचार पत्र आदमी को आदमी पर विश्वास करने से रोकता है। लेखक के अनुसार जिस स्वतंत्र भारत का स्वप्न गांधी, तिलक, टैगोर ने देखा था यह भारत अब उनके स्वप्नों का भारत नहीं रहा। आज के समय में ईमानदारी से कमाने वाले भूखे रह रहे हैं और धोखा धड़ी करने वाले राज कर रहे हैं। लेखक के अनुसार भारतीय हमेशा ही संतोषी प्रवृत्ति के रहें हैं। वे कहते हैं आम आदमी की मौलिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कानून बनाए गए हैं किन्तु आज लोग ईमानदार नहीं रहे। लेखक को यह सोचकर अच्छा लगता है कि अभी भी लोगों में इंसानियत बाकी है उदाहरण के लिए वे बस और रेलवे स्टेशन पर हुई घटना की बात बताते हैं। इन उदाहरणों से लेखक के मन में आशा की किरण जागती है और वे कहते हैं कि अभी निराश नहीं हुआ जा सकता।

रविंद्र नाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना - गीत में लिखा है यदि संसार में धोखा या नुकसान भी उठाना पड़े तो हे प्रभु! मुझे ऐसी शक्ति दो, कि मैं तुम पर कोई संदेश ना करूं। लेखक का मानना है कि आशा की ज्योति अभी बुझी नहीं है महान भारत वर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है और बनी रहेगी। अतः निराश होने की आवश्यकता नहीं है।

कठिन शब्दों के अर्थ

ठगी: चालबाजी
संस्कृति: परम्परा
अतीत: बीता हुआ समय
महा-समुद्र: महासागर
आरोप-प्रत्यारोप: एक-दूसरे को गलत
ठहराना
मनीषियों: ऋषियों
जीविका: रोज़गार
निरीह: कमजोर
श्रमजीवी: मेहनत करने वाला
फरेब: धोखा
भ्रष्टाचार: बुरा आचरण
आक्रोश: गुस्सा
प्रतिष्ठा: इज्जत
पर्दाफ़ाश: भेद खोलना
आचरण: व्यवहार
उजागर: प्रकट
तस्करी: चोरी से सीमा पार माल ले जाने
की क्रिया

पर्याय: समानार्थी
भीरु: डरपोक
बेबस: लाचार
भौतिक: सांसारिक
संग्रह: इकट्ठा करना
चरम: अंत
परम: प्यारा
लोभ-मोह: लालच
काम-क्रोध: गुस्सा
स्वाभाविक: स्वतः
विद्यमान: उपस्थित
आचरण: व्यवहार
दरिद्रजनों: गरीब लोग
विनम्रता: शालीनता
विचित्र: अनोखा
संतोष: तस्सल्ली
गतंव्य: वह स्थान जहाँ किसी को
पहुँचना हो
निर्जन: सुनसान

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न 1: लेखक ने स्वीकार किया है कि लोगों ने उन्हें भी धोखा दिया है फिर भी वह निराश नहीं हैं। आपके विचार से इस बात का क्या कारण हो सकता है?

उत्तर-1. लेखक ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों का वर्णन करते हुए कहा है कि उसने धोखा भी खाया है पर उसका मानना है कि अगर वो इन धोखों को याद रखेगा तो उसके लिए भरोसा करना बेहद कष्टकारी होगा और ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण उनकी सहायता की है इसलिए उसे विश्वास है कि समाज में मानवता, प्रेम, आपसी सहयोग समाप्त नहीं हो सकते।

प्रश्न-2. दोषों का पर्दाफाश करना कब बुरा रूप ले सकता है?

उत्तर-2. दोषों का पर्दाफाश करना तब बुरा रूप ले सकता है जब हम किसी के आचरण के गलत पक्ष को उजागर करके उसमें रस लेते हैं या जब हमारे ऐसा करने से वे लोग उग्र रूप धारण कर किसी को हानि पहुँचाए।

प्रश्न-3. आजकल के बहुत से समाचार पत्र या समाचार चैनल 'दोषों का पर्दाफाश' कर रहे हैं। इस प्रकार के समाचारों और कार्यक्रमों की सार्थकता पर तर्क सहित विचार लिखिए?

उत्तर-3. इस प्रकार के पर्दाफाश से समाज में व्याप्त बुराईयों से, अपने आस-पास के वातावरण तथा लोगों से अवगत हो जाते हैं और इसके कारण समाज में जागरूकता भी आती है साथ ही समाज समय रहते ही सचेत और सावधान हो जाता है। टीवी चैनल व समाचार पत्रों द्वारा जो 'दोषों का पर्दाफाश' किया जा रहा है वो पहले किसी सीमा तक सही हुआ करता था। आजकल समाचार पत्र और चैनल केवल अपनी T.R.P. का ही ध्यान रखते हैं। जो कि सही नहीं है

प्रश्न-4. निम्नलिखित के संभावित परिणाम क्या-क्या हो सकते हैं? आपस में चर्चा कीजिए, जैसे- 'ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है।' परिणाम-भ्रष्टाचार बढ़ेगा।

1. "सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है।"

2. "झूठ और फरेब का रोज़गार करनेवाले फल-फूल रहे हैं।"

3. "हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कमा"

उत्तर:-1. "सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। – तानाशाही बढ़ेगी

2. "झूठ और फरेब का रोज़गार करनेवाले फल-फूल रहे हैं।" – भ्रष्टाचार बढ़ेगा

3. "हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कमा" – अविश्वास बढ़ेगा

प्रश्न-5: लेखक ने लेख का शीर्षक ‘क्या निराश हुआ जाए’ क्यों रखा होगा? क्या आप इससे भी बेहतर शीर्षक सुझा सकते हैं?

उत्तर-5. लेखक ने इस लेख का शीर्षक ‘क्या निराश हुआ जाए’ उचित रखा है। आजकल हम अराजकता की जो घटनाएँ अपने आसपास घटते देखते रहते हैं। जिससे हमारे मन में निराशा भर जाती है। लेकिन लेखक हमें उस समय समाज के मानवीय गुणों से भरे लोगों को और उनके कार्यों को याद करने कहा हैं जिससे हम निराश न हो। इसका अन्य शीर्षक ‘हम निराशा से आशा’ भी रख सकते हैं।

प्रश्न-6. ‘आदर्शों की बातें करना तो बहुत आसान है पर उन पर चलना बहुत कठिन है।’ क्या आप इस बात से सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर -6. ‘आदर्शों की बातें करना तो बहुत आसान है पर उन पर चलना बहुत कठिन है।’ – मैं इस कथन से सहमत हूँ क्योंकि व्यक्ति जब आदर्शों की राह पर चलता है तब उसे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। असामाजिक तत्वों का अकेले सामना करना पड़ता है।

भाषा की बात

प्रश्न-1. दो शब्दों के मिलने से समास बनता है। समास का एक प्रकार है – द्वंद्व समास।

इसमें दोनों शब्द प्रधान होते हैं। जब दोनों भाग प्रधान होंगे तो एक-दूसरे में द्वंद्व (स्पर्धा, होड़) की संभावना होती है। कोई किसी से पीछे रहना नहीं चाहता, जैसे – चरम और परम = चरम-परम, भीरु और बेबस = भीरु-बेबस। दिन और रात = दिन-रात। 'और' के साथ आए शब्दों के जोड़े को 'और' हटाकर (-) योजक चिह्न भी लगाया जाता है। कभी-कभी एक साथ भी लिखा जाता है। द्वंद्व समास के बारह उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर-1.

सुख और दुख	सुख-दुख
भूख और प्यास	भूख-प्यास
हँसना और रोना	हँसना-रोना
आते और जाते	आते-जाते
राजा और रानी	राजा-रानी
चाचा और चाची	चाचा-चाची
सच्चा और झूठा	सच्चा-झूठा
पाना और खोना	पाना-खोना
पाप और पुण्य	पाप-पुण्य
स्त्री और पुरुष	स्त्री-पुरुष
राम और सीता	राम-सीता
आना और जाना	आना-जाना

प्रश्न-2. पाठ से तीनों प्रकार की संज्ञाओं के उदाहरण खोजकर लिखिए।

उत्तर-2. व्यक्तिवाचक संज्ञा : आर्यन, दिल्ली, रविंद्र नाथ ठाकुर, भारतवर्ष, महात्मा गांधी आदि।

जातिवाचक संज्ञा : बस, यात्री, मनुष्य, डाइवर, कंडक्टर, हिन्दू, मुस्लिम, आर्य, द्रविड़, पति, पत्नी आदि।

भाववाचक संज्ञा : ईमानदारी, सच्चाई, झूठ, चोर, डकैत आदि।